97

IMPACT FACTOR IIFS - 5.875 (7) ISSN-2278-3911

SHODH-PRAKALP

A Quarterly Research Journal

शोध-प्रकल्प

त्रैमासिक रिसर्च जर्नल

A Peer Reviewed Research Journal

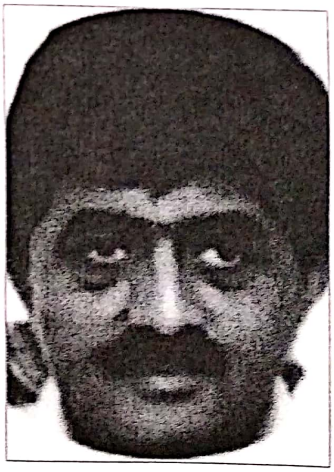

Editor
Dr. Sudhir Sharma
Guest Editor
Dr. Sandeep Awasthi

मुख्य संयोजक

Volume XCVII
Oct-Dec- 2021

आर. एन. आई. पंजीयन क्रमांक : MPHIN/1997/2224

विशेष अंक

नई शिक्षा नीति के संदर्भ में शोध के विषय और उसकी अवधारणा

Scanned with OKEN Scanner

www.shodh-prakalpresearch.com

SHODH-PRAKALP
A Quarterly Peer Reviewed
Refereed Research Journal

ISSN 2278-3911

बस्तर जिले की माुड़िया जनजाति के गौर सिंग नृत्य का साहित्यिक सांस्कृतिक अध्ययन

डॉ. योगेन्द्र मोतीवाला
सहा. प्राध्यापक, हिन्दी,
शास. दंतेश्वरी स्नातकोत्तर
महिला महाविद्यालय
जगदलपुर, (छ.ग.)

डॉ. श्यामा चरण ओगे
सहा. प्राध्यापक, मानवविज्ञान,
शास. दंतेश्वरी स्नातकोत्तर
महिला महाविद्यालय
जगदलपुर, (छ.ग)

डॉ. राजेन्द्र सिंह
अनुसंधान सहायक,
जनजातीय अनुसंधान
संस्था, जगदलपुर, (छ.ग.)

इन्द्रो टेकाम
शोध छात्रा,
बस्तर विश्वविद्यालय,
जगदलपुर, (छ.ग.)

नृत्य मनुष्य की एक शारीरिक, अर्थपूर्ण एवं भावपूर्ण अभिव्यक्ति है। जनजातियों में लोक नृत्य एक मिश्रित सम्पूर्ण कला है और उनकी संस्कृति का प्रभावी लक्षण है। बस्तर की जनजातीय जीवन से जुड़े विभिन्न पक्षों, मूल्यों, कर्तव्यों, ज्ञान एवं संस्कृति को हम इन नृत्यो में समाहित पाते हैं। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य बस्तर जिले केमाुड़िया जनजाति में किए जाने वाले गौर सिंग नृत्य का साहित्यिक अध्ययन करना है।

सारांश :–

नृत्य मनुष्य की एक शारीरिक, अर्थपूर्ण एवं भावपूर्ण अभिव्यक्ति है। जनजातियों में लोक नृत्य एक मिश्रित सम्पूर्ण कला है और उनकी संस्कृति का प्रभावी लक्षण है। बस्तर की जनजातीय जीवन से जुड़े विभिन्न पक्षों, मूल्यों, कर्तव्यों, ज्ञान एवं संस्कृति को हम इन नृत्यों में समाहित पाते हैं। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य बस्तर जिले के धुरूवा जनजाति में किए जाने वाले गौर सिंग नृत्य का साहित्यिक अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक आकड़ों के संकलन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर जिले के छोटेगुडरा ग्राम में निवासरत धुरवा जनजाति को चुना गया है। धुरवा जनजाति में प्रचलित गौर सिंग नृत्य की विडियों रिकार्डिग, फोटोग्राफी और साक्षात्कार किया गया।

सांकेतिक शब्दः – लोकनृत्य1, गौर सिंग नृत्य2, माुड़िया जनजाति3।

प्रस्तावना

"नृत्य एक ऐसी संकेत या क्रिया है जिसमें कोई व्यक्ति संगीत के अनुरूप लयबद्ध तरीके से अपने शरीर के अगों को गति प्रदान करता है। यह संचार की एक कलात्मक, मौखिक, भावात्मक अभिव्यक्ति है।"[1]

नृत्य मनुष्य की एक ऐसी शारीरिक सांस्कृतिक, सुन्दर, अर्थपूर्ण एवं भावपूर्ण अभिव्यक्ति हैं जिसे व्यक्ति के शारीरिक अंगो को विभिन्न गतियों या मुद्राओं, साज, पोशाकों द्वारा किसी ताल और लय के अनुरूप प्रकट किया जाता है। इन मुद्राओं या गतियों को देखकर दर्शक किसी निश्चित भाव भंगिमाओं को समझता है। जनजातियों में नृत्य का अतिविशिष्ट महत्व है और यह नृत्य उनके जीवन के प्रत्येक अवस्थाओं से जुड़ा हुआ है। उनके जीवन का ऐसा कोई उत्सव नहीं होता, जिसमें वे नृत्य को शामिल नहीं करते चाहे जन्म हो या मुत्यु, विवाह, नामकरण, पौधारोपण, कृषि, फसल कटाई, शिकार, भोज, या कोई अन्य अवस्था, प्रत्येक अवसर पर अलग–अलग प्रकार के नृत्य किये जाते हैं।

जनजातियों में नृत्य का अतिविशिष्ट महत्व है और यह नृत्य उनके जीवन के प्रत्येक अवस्थाओं से जुड़ा हुआ है। उनके जीवन का ऐसा कोई उत्सव नहीं होता, जिसमें वे नृत्य को शामिल नहीं करते चाहे जन्म हो या मुत्यु, विवाह, नामकरण, पौधारोपण, कृषि, फसल कटाई, शिकार, भोज, या कोई अन्य अवस्था, प्रत्येक अवसर पर अलग–अलग प्रकार के नृत्य किये जाते हैं।

बस्तर की आदिवासी संस्कृति में नृत्य का विशिष्ट स्थान है। जनजातीय जीवन से जुड़े विभिन्न पक्षों, मूल्यों, कर्तव्यों एवं ज्ञान को हम इन नृत्यों में समाहित पाते हैं। नृत्य–गीतों के माध्यम से अपनी लोक संस्कृति के हस्तानान्तरण परम्परागत रूप से पीढ़ी दर–पीढ़ी होते आया है। नृत्य न केवल मनोरंजन के माध्यम है बल्कि यह जनजातीय संस्कृति का इतना महत्वपूर्ण पक्ष है जिसे इनके जीवन से अलग करना असम्भव है और इन नृत्य के माध्यम से विभिन्न आन्तरिक सांस्कृतिक मूल्य पोषित हो रहे है, चाहे यह उनके आर्थिक जीवन के मूल्य हो या धार्मिक, शैक्षिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत मूल्य हो। बस्तर के आदिवासी समाज इन्ही सांस्कृतिक विशिष्टताओं के कारण

Scanned with OKEN Scanner

विश्व–विख्यात है।

बस्तर जिले में मुख्यतः हल्वा, भतरा, मुरिया, माड़िया, धुरवा एवं दोरला जनजाति निवास करती है। इनमें विभिन्न त्यौहार या महोत्सव जैसे बस्तर दशहरा, चईत परब, अमूस, गोन्चा, गेड़ी, आमाखानी, दियारी, छेरछेरा, जात्रा आदि प्रचलित है जिसमें विभिन्न प्रकार के नृत्यों को प्रस्तुत किया जाता है। इन नृत्यों में डन्डारी नृत्य, गौर सिंग नृत्य, ककसाड़ नृत्य, गेड़ी नृत्य सर्वाधिक प्रचलित है। इन नृत्यों में सामाजिक साम्प्रदायिक सद्भावना परिलक्षित होती है। जनजातियों में प्रचलित लोक नृत्यों में गांव के निवासी कृत्रिम शिष्टता, बनावटी मर्यादा के मुखौटे को भूलकर हार्दिक आत्मीयता के साथ सहभागिता प्रकट करते हैं। इन नृत्यों में रंगमंच की आवश्यकता नहीं होती। प्रकृति के उन्मुक्त वातावरण में, खुले मैदान में, गांव के गली में संचालित होता है। सामान्य अथवा विशिष्ट वेशभूषा, साज–सज्जा युक्त नर्तक अत्यंत आकर्षक एवं मनोरम दिखते हैं। इन नृत्यों में समय का कोई बन्धन नहीं होता, कई नृत्य और त्यौहार तो कई दिन तक संचालित होते रहते हैं। नृत्यों को मनमोहक और मनोरंजक बनाने हेतु नृत्यों में विभिन्न वाद्ययन्त्रो एवं लोक गीतो का प्रयोग किया जाता है। इसके परिणाम स्वरूप नृत्य को ताल एवं लय प्राप्त होता है। इन लोक गीतो के माध्यम से मनुष्य अपनी भावनाओं जैसे– प्रेम, विरह, मिलन, आनन्द, क्रोध, उमंग आदि को अभिव्यक्त करता है।

1. पूर्व में किये गये कार्यो का अध्ययन

जब भी मानव समुदाय विशेष सामाजिक–सांस्कृतिक परिदृश्य का उल्लेख हुआ है तब उनकी लोक संस्कृति में हम नृत्य एवं गीत–संगीत का समावेश पाते हैं। छत्तीसगढ़ में निवासरत आदिवासी समूह अपनी विलक्षण सांस्कृतिक धरोहर के कारण अध्ययनकर्ताओं के विशेष आकर्षण का क्षेत्र रहा है। सर्वश्री ग्रिगसन (1938) महोदय ने पहाड़ी माड़िया और बाइसन हार्न माड़िया में प्रमुख नृत्य ककसार, विवाह नृत्य एवं बाइसन हार्न माड़िया नृत्य करने के तरीके, विधि, एवं उसके विभिन्न पक्षों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है।[2] सन् 1947 में वेरियर एल्विन ने छत्तीसगढ़ के बस्तर में निवासरत मुरिया जनजाति में पाये जाने वाले युवागृह घोटुल में होने वाले विभिन्न नृत्य, गीत, नृत्य मुद्राओं, खेल तथा अन्य सामाजिक–सांस्कृतिक क्रियाकलापों का सुव्यवस्थित एवं वृहद अध्ययन किया।[3] 485–521, लाला जगदलपुरी (1994) ने अपनी रचना 'बस्तर इतिहास एवं संस्कृति' में बस्तर की जनजातियों का परिचय देते हुए उनके संस्कृति का अभिन्न अंग नृत्य एवं संगीत की व्याख्या प्रस्तुत की है। उन्होने स्थानीय बोलियों हल्बी, भतरी में लोक गीतों को, नृत्य दल की विशेषताएं, आभूषण–पहनावा, वाद्ययंत्र, विशेषकर दण्डामी माड़िया नर्तक, करसाड़ नर्तक, डंडारी नर्तक, गेड़ी नर्तक आदि का विस्तृत एवं विश्लेषणात्मक वर्णन किया है।[4]

2. अध्ययन का उद्देश्य एवं महत्व

इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य बस्तर जिले के धुरूवा जनजाति में गुरगाल नृत्य का साहित्यिक अध्ययन करना है जिससे धुरवा जनजाति के संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पहलू पर अध्ययनकर्ताओं, पाठको का ध्यान आकृष्ट कर भविष्य के अध्ययनकर्ताओं को इस क्षेत्र में षोधकार्य करने के लिए प्रेरित करे।

3. अध्ययन क्षेत्र, समुदाय एवं शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन कार्य में आकड़ो के संकलन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य में स्थित बस्तर जिले के छोटेगुडरा गांव में निवासरत धुरवा जनजाति को चुना गया है। (चित्र क्रमांक 1) धुरवा जनजाति में प्रचलित गौर सिंग नृत्य का विडियों रिकार्डिग, फोटोग्राफी और साक्षात्कार किया गया।

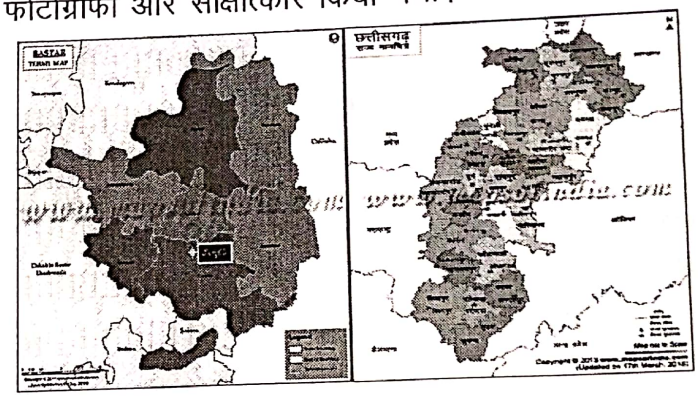

4. परिणाम एवं विश्लेषण

नृत्य की एक विशेषता है मोहक वेशभूषा और अंलकरण, अंगों की सजावट। इसलिए नृत्य प्रारंभ से ही कला के आकर्षण का केंद्र रहा है। बस्तर जिले के धुरवा जनजाति में प्रचलित गौर सिंग नृत्य का साहित्यिक वर्णन एवं विष्लेषण प्रस्तुत है।

गौर सिंग नृत्य– बस्तर संभाग के डण्डामी माड़िया जनजाति में किये जाने वाला 'गौर नृत्य–अपने वाद्य यंत्रों, नृत्य श्रृंगार, नृत्य शैली आदि के कारण अत्यंत ही लोकप्रिय, आकर्षक एवं विश्वविख्यात है। इस नृत्य को 'बायसन हार्न माड़िया' नृत्य भी कहा जाता है क्योंकि नर्तक लोग अपने सिर में बायसन (भैंस) गौर के सिंगो से बना मुकुट लगाकर नृत्य करते है जो दुल्हे के मोर मुकुट सदृश्य लगता है। बाँस और कपड़े के आधार पर बनाया गया तिकोना मुकुट के बीच में पक्षियों के बहुरंगी पंखों का गुच्छा अत्यंत आकर्षक लगता है। इस मुकुट को कोवड़ा कहा जाता है। मुकुट के पीछे एक लम्बा रंगीन कपड़ा लटकता है और सामने की ओर कौड़ियों की सुंदर

Scanned with OKEN Scanner

लड़िया झूलती रहती है तथा नर्तक के गले में काँच पत्थर और प्लास्टिक की रंगीन मालाए लहराती रहती है। इनके गले में भारी भरकम बीजा लकड़ी का मांदर (ढोल) लटकता रहता है, जिसके दोनो ओर चमड़ा मढ़ा होता है। इसके बायी ओर को लकड़ी के सहारे तथा दांयी ओर हथेली से बजाते हुए नृत्य करते है। गौर नृत्य में नर्तक दल के प्रत्येक नर्तकी के दाहिने हाथ में बाँस की छड़ी से बनी तिरहुड्डी होती है जिसके ऊपरी भाग पर लगी लोहे के खोखली फलियाँ खनक पैदा करती है क्योंकि नृत्य के दौरान नर्तकी तिरडुड्डी को जमीन में बार–बार पटकती है। नर्तकी के साज–सज्जा में सिर पर पीतल की चौड़ी पट्टी, कौड़िया, गले में सिक्कों की अन्य मालाए, बाहों में नागमोरी या बाहुटे, कलाइयों में कड़े व चूड़ियाँ, नाक के दोनों ओर फूल, कान में खिनवां व पैर में पैड़िया सम्मिलित है।

चित्र क्र.-65 पारंपरिक पहनावे में गौर सिंग नृत्य दल (ग्राम गुड़ियापाल)

इस नृत्य को अध्येताओं ने 'गबर नृत्य' भी कहा है। एल्विन ने इसे "बाइसन हार्न माड़िया नृत्य" कहा। घने जंगलों में विशेष रूप से दंतेवाड़ा की पहाड़ियों में माड़िया आदिम जनजाति में इसकी परंपरा जीवित हैं। जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि अलग–अलग स्थानों में इसके रूप में भिन्नता दिखाई देती है। यह वन्य जीवन व्यतीत करने वाले वनवासियों की विशिष्ट परंपरा है। ये कठिन परिस्थितियों में जीवन जीना जानते है। बस्तर के इस क्षेत्र में पहाड़ी इलाकों में खेती करना भी यहाँ के लोगो ने शुरू कर दिया है। खेतों की फसल कटकर जब खलिहानों में आती है, तब फसल को देवताओं को समर्पित किया जाता है। श्री शरीफ मोहम्मद इसे ही 'गबर नृत्य' का प्रमुख प्रयोजन मानते हैं। संभवतः खेतों में लहराती फसल का ही यह प्रभाव है कि हवा में झूमती हुई फसल का डोलना "गबर नृत्य" करने वाली महिलाओं की मुद्राओं में परिलक्षित होता है। विवाह, उत्सव एवं अन्य अवसरों पर भी इसे करने की परंपरा मिलती है।

इस जनजाति नृत्य में गले में ढोल लटकायें युवकों की नृत्य क्षमता भी गजब की होती है। वे लगभग 20–25 किलोग्राम वजन का ढोल बांधे, उसे बजाते हुए कुशलता से नृत्य करते रहते हैं। आज के शहरी जीवन जीने वाले व्यक्ति के लिए इस ढोल को थोड़ी देर लटकाना भी 'आह' निकाल देने वाला साबित हो सकता है।

इस नृत्य में स्त्रियाँ दोनो पांवों में घुंघरू (मुया) गले में दो–तीन सुतिया, बांहों और कलाई में वजनी चूड़े पहने रहती हैं। इसके अलावा विरासत से प्राप्त रूपयों की माला (सिक्कों की माला), वजनी पैड़ी, ऊपर जलाजल (जंजीर में बंधे घुंघरू), माथे में कौड़ी पाटा, गले में लाल माला (कुंम काया), कमर में करधौन, बालों में मुर्गे के पंख, कान में रोयो (झूमका), बाल के जूड़े में फूल एवं लिपिस्टिक का श्रृंगार करती हैं। एक तरह से वे स्त्री के संपूर्ण का साक्षात्, दर्शन कराती प्रतीत होती है।

5. निष्कर्ष एवं सुझाव

बस्तर जिला देश के प्रमुख जनजाति क्षेत्र है यहां की प्राकृतिक सौंदर्य, खनिज संसाधन, वन तथा जनजातीय संस्कृति अद्वितीय है। इस जनजातीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा लोकनृत्य है। छत्तीसगढ़ एवं बस्तर जिले के लोकनृत्यों का वर्गीकरण एवं सामाजिक–धार्मिक दृष्टिकोण में छिटपुट अध्ययन किया गया है किन्तु शारीरिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक दृष्टि से वर्णन कम किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन से बस्तर के लोकनृत्य गुरगाल के छुए–अनछुए पहलू उजागर हुए है। अतः जनजातीय नृत्य एवं गीतों की विविधता निरंतरता कुशलता को पहचानने एवं बनाए रखने की दृष्टि से शोध कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। बस्तर जिले की जनजातियों के नृत्य का अभिलेखीकरण व वीडियोग्राफी कर संरक्षण किया जाय। शासन के विशेष सहयोग से राज्य स्तर पर परंपरागत जनजातीय नृत्य, संगीत अकादमी की स्थापना किया जाय। यह परंपरागत जनजातीय नृत्य, संगीत के संरक्षण एवं विकास हेतु प्रतिबद्ध होगा।

आभार

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, क्षेत्रीय केन्द्रीय कार्यालय, भोपाल के अधिकारियों का मुझे अमूल्य आर्थिक सहयोग एवं इस अध्ययन के केन्द्र बिन्दु बस्तर जिले के विभिन्न जनजातीय नर्तक, नर्तकियां एवं ग्रामिणों को विशेष आभार जिनका योगदान एवं सहभागिता इस शोध में प्राथमिक स्रोत के रुप में रहा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. www-merriam&webster-com/dictionary/dance
2. Grigson, W. (1938) The Maria Gonds of Bastar. Delhi: Vanya Prakashan, India-p&183&185.
3. Elwin, V. (1947) The Muria and their Ghotul- Delhi : Vanya prakashan. India- p&485&521-
4. जगदलपुरी, एल. (1994). बस्तर इतिहास एवं संस्कृति, भोपालः मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, भारत।
5. www-census2011-co-in/census/district/499&bastar-html
6. www-mapsofindia-com
7. Russel, R. V. & Hiralal, R. B. (1916) The Tribal and Caste central provines of India- London: Reprint in McMillan and Co-Ltd. London.

Scanned with OKEN Scanner